पहला संस्करण, १९५९

दूसरा परिवर्धित संस्करण, १९६२

लेखक

डा० रामविलास शर्मा

मूल्य १ रुपया ५० नये पैसे

निराला
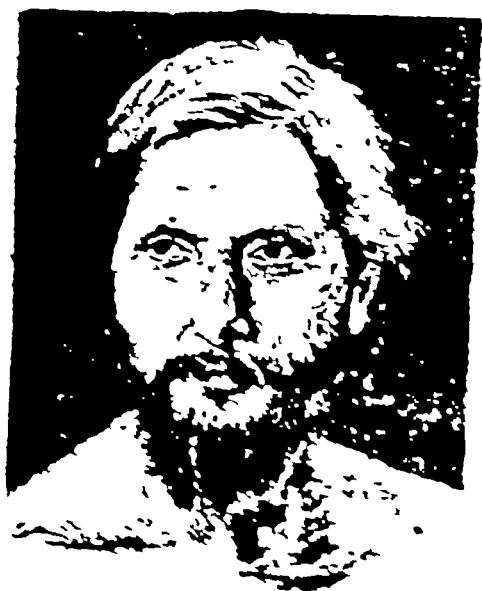
इतवार को नहा-धोकर फुर्सत से मैं निराला जी की कविताएं पढ़ने के लिए उनकी पुस्तक "अनामिका" लेकर बैठा था कि मेरी छोटी लड़की सेवा पीछे से आकर किताब में झांकने लगी।

यह उसकी बहुत बुरी आदत है कि जब मैं कोई किताब पढ़ता हूं तो वह यह जानने की कोशिश करती है कि मैं क्या पढ़ रहा हूं। छुट्टी के दिन मैं कभी-कभी उसे कोई आसान किताब पढ़ने को दे देता हूं या खुद उसे पढ़कर सुनाता हूं।

इसी तरह उसने क्यूरी और जगदीश चन्द्र बसु पर पुस्तकें पढ़ी हैं।

मेरे हाथ में "अनामिका" देख कर उसने कहा, "आज यही किताब पढ़ कर सुनाइये।"

मैंने कहा, "तुम हिसाब में कमजोर हो। जाओ सवाल करो। यह किताब बहुत कठिन है। तुम्हारी समझ में न आयेगी।"

मेधा क्या यह कहानियो की किताब नही है ?

मै नहीं, यह कविताओ की किताब है और इसके लेखक हिन्दी के बहुत बडे कवि निराला जी है।

मेधा हां, उनका नाम तो मैने बहुत बार सुना है.

मै किससे सुना है ?

निराला जी तो हिन्दी के
कवि है न ?...

होनहार शब्द सुनकर सेवा कुछ गंभीर हो गयी थी मानो अपने भविष्य के बारे मे सोचने लगी हो। फिर अचानक उसकी निगाह किताब मे छपी तस्वीर की ओर गयी और वह बोली यह तस्वीर निराला जी की ही है।

मैंने कहा . हा, यह तस्वीर उन्ही की है। देखो कैसी तगडी गर्दन है। आखे बडी-बडी और नाक लम्बी है। निराला जी को कसरत-कुश्ती का शौक था। फुटबाल खेलते थे। दंड-बैठक करते थे। अखाडे मे कुश्ती भी लडते थे।

मुझे टोककर सेवा ने पूछा लेकिन इनके सिर पर तो इतने बडे-बडे बाल है। जब अखाडे मे कुश्ती लडते होगे तब मिट्टी मे लिपड न जाते होगे ?

मैने कहा लिपड तो जरूर जाते होगे लेकिन लडकपन मे वह इतने बडे बाल नहीं रखते थे।

लगी। इस पर मुझे गुस्सा आ गया। मैने कहा हसती क्या है। तेरा बाप भी तो उसी गाव के पास पैदा हुआ था। तू शहर मे पैदा हुई तो गाव के नाम पर हसती है?

सेवा ने हसी रोक कर कहा गावो के अच्छे नाम भी तो होते है! लेकिन यह गढाकोला

वह फिर हसने को थी कि मैने कहा देख, बैसवाडे मे बडे-बडे लेखक पैदा हुए है प्रतापनारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, शिवमगल सिह सुमन, सनेही जी, हितैपी जी। ये सब वहा तो पैदा हुए थे। उन्ही मे निराला जी भी थे।

इस पर सेवा ने टोक कर कहा लेकिन आप तो कह रहे थे कि वह बगाल मे पैदा हुए थे।

मै हा, ठीक ही कहा था। उनके माता-पिता बैसवाडे मे रहते थे फिर बगाल चले गये। वही निराला जी का जन्म हुआ।

महिषादल । वही के राजा के यहा निराला जी के पिता सिपाही थे ।

सेवा सिपाही ! बदूक चलाते थे ?

मै बदूक पास रखते थे । शायद चलाने की जरूरत तो न पडी होगी ।

सेवा निराला जी अपने पिता से बहुत डरते होगे क्योकि उनके पास बदूक थी ।

मै डरते तो वह बिना बदूक के भी थे । कभी-कभी उनके पिता जी उन्हे पीट दिया करते थे ।

सेवा निराला जी अपनी किताब न पढते होगे !

मै किताब तो पढते थे, लेकिन उनकी कुछ बाते उनके पिता को पसन्द न थी । कभी-कभी बिना बात के भी मार बैठते थे ।

सेवा निराला जी पढते न होगे तो लेखक कैसे बनते ?

मै हा कोर्स की किताबे कम पढते थे, खेल-कूद मे ज्यादा रहते थे । हाई स्कूल तक पहुच कर अटक गये । इस बीच उनकी शादी भी हो गयी ।

सेवा इतनी जल्दी शादी ? तब तो वह बहुत छोटे रहे होगे ?

मै हा ! पहले लोग अपने बच्चो की शादी जल्दी कर देते थे ।

सेवा कहानी का नाम "कुल्ली भाट" क्यो रखा ?

मैं इसलिए कि ससुराल मे इस नाम के उनके एक मित्र थे। वह हरिजनो के लडको को पढाया करते थे।

सेवा हरिजन कौन ?

मैं पहले हमारे यहा भगियो-चमारो वगैरह को छूना पाप समझा जाता था। कुल्ली छुआछूत न मानते थे, न निराला जी मानते थे।

सेवा इसीलिए उनके पिता जी उन्हे पीटते होगे !

मैं शायद। लेकिन छुआछूत के विरुद्ध लडाई निराला जी ने बाद मे की। तब उनके पिता जी का देहान्त हो गया था।

सेवा देहान्त कैसे हुआ ?

मैं एक बार बडी भयानक बीमारी फैली। उसे इन्फ्लुएंजा कहते है।

सेवा इन्फ्लुएंजा तो बुखार को कहते है।

मैं हा बुखार की बीमारी थी। उसमे निराला जी का परिवार मिट गया। उनकी पत्नी भी अपने दो छोटे बच्चो को छोडकर चल बसी।

निराला जी बहुत दुखी रहते होंगे ?

सेवा निराला जी अब बहुत दुखी रहते होगे ?

मैं हा, वह बहुत दुखी रहते थे। लखनऊ के पास गगाजी बहती है न ! गगा के किनारे श्मशान है जहा मुर्दे जलाये जाते थे। वहा निराला जी आधी-आधी रात को अकेले घूमा करते थे।

सेवा डर न लगता था उन्हे ?

मैं नही निराला जी किसी से भी न डरते थे।

सेवा भूत-प्रेत से भी नही ?

मैं भूत-प्रेत तो उन्हे देख कर भाग जाये। लम्बे-चौडे आदमी, बडे-बडे बाल। मार-पीट मे कोई उनसे जल्दी जीत भी न सकता था। वैसे उन्हे सुनसान जगहो मे घूमने का बडा शौक था। ऐसे ही उन्होने मसान मे जुही का पेड देखा था और उस पर कविता लिखी थी। तुमने जुही का पेड देखा है न ?

सेवा चमेली का देखा है।

मैं उसी से मिलता-जुलता जुही का फूल होता है। छोटे-छोटे फूलो के गुच्छो से हवा महक उठती है। उसी पर निराला जी ने अपनी पहली कविता लिखी थी। इस कविता का नाम रखा था 'जुही की कली'।

सेवा इसके पहले वह कविता न लिखते थे ?

मैं शायद लिखते रहे हो, लेकिन इसे वह अपनी पहली कविता कहा करते थे।

सेवा कविता छपने पर उन्हे पैसे मिले थे ?

मैं अरे वह कविता बडे निराले ढंग की थी। उसकी कोई लाइन बडी थी, तो कोई छोटी। लोग उसे गा कर भी न पढ सकते थे।

इस पर सेवा फिर हसने लगी और बोली . ऐसी कविता किस काम की जिसकी लाइने छोटी-बडी हों, जो गायी भी न जा सके ?

मैं तेरी जैसी अकल के उस समय बहुत से विद्वान थे। वे भी निराला जी को कवि न मानते थे। पहले उनकी कविता न छपी।

सेवा लोग उसे गा न पाते होगे, इसलिए न छापा होगा।

मैं यह कोई जरूरी बात थोडे ही है कि कविता गायी ही जाय। सुनो, वह कविता यो शुरू होती है

भुवन भौन छोडै नही, चौबे जी की आस ।
याही सुख की आस मे, जात न काहू पास ।।

जहा भुवन दिखे, वही निराला जी ने दोहा कहना शुरू किया और हँसी के मारे अक्सर आधा ही कह पाते थे ।

लखनऊ के सुन्दरबाग मोहल्ले मे हम लोगो के मित्र श्री छगालाल मालवीय रहते थे । निराला जी उधर से निकलते हुए अक्सर उनके यहा बैठकर गपशप करते थे । उनका छोटा लडका उन्हे ध्यान से देखता था । एक दिन उसने उनकी नकल उतारने की ठानी । उनकी छडी उठाकर उन्ही की तरह धीरे-धीरे झूमकर चलते हुए उसने कमरे का चक्कर लगाया । निराला जी अपनी नकल देख कर बहुत प्रसन्न हुए और बच्चे को शाबाशी दी ।

बच्चो जैसे उनके कोमल हृदय मे अपार दया थी । उन्होने अपनी एक कविता मे स्वामी विवेकानन्द के बारे मे लिखा है कि गाव मे उन्हे रोती हुई लडकी मिली जिसका घडा फूट गया था । स्वामी जी ने उसे घडा खरीद दिया । एक बुढिया बीमार थी । कोई उसकी देखभाल करने वाला न था । स्वामी जी ने उसकी उसी तरह देखभाल की जैसे कोई पुत्र अपनी

यही है वह पत्र—'मतवाला'।

के मालिक बाबू महादेव प्रसाद सेठ निराला जी का बहुत सम्मान करते थे। निराला जी खूब कविताए लिखने लगे।

सेवा निराला जी बस फूलो पर ही कविताए लिखते थे ?

म फूलो पर लिखी है। बरसात उन्हे बहुत पसद थी। बादलो के गरजने और बरसने पर कविताए लिखी है। उनकी कविता सुनो तो लगेगा जैसे सचमुच बादल गरज रहा है

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर।
राग अमर! अम्बर मे भर निज रोर!
झर झर झर निर्झर गिरि सर मे,
घर, मरु, तरु-मर्मर, सागर मे,
सरित, तड़ितगति, चकित पवन मे,
मन मे, विजन गहन कानन मे,
आनन-आनन मे, रव घोर कठोर।
राग अमर! अम्बर मे भर निज रोर!

सेवा हा, यह तो सुनने मे सचमुच अच्छी लगती है। पर गीत है न ? आप तो कहते थे कि उनकी कविता गायी नही जा सकती।

तरह गुडा, लेकिन स्पोर्ट्समैन था, झडबेर की झाडी तक पहुचते-पहुंचते अड गया।"

सेवा यह स्पोर्ट्समैन क्या ?

मैं . स्पोर्ट्समैन का मतलब खेलने-कूदने वाला।

सेवा . तो क्या निराला जी खेलते-कूदते भी थे ?

मै अरे निराला जी को मुसीबतो ने मिटा दिया नही तो उन जैसा मस्त आदमी दूसरा नही था। लड़कपन मे फुटबॉल का बहुत शौक था। जब अवस्था दूसरी हो गयी, तब भी लखनऊ मे कोई फुटबाल का अच्छा मैच हो तो देखने जरूर पहुच जाते थे। कही फील्ड मे लडके खेल रहे हो तो किक लगाने खुद भी पहुच जाते थे। कही दगल हो तो निराला जी टिकट लिये कुश्ती देखने चले जा रहे है। कभी गाने की तबियत हुई तो हार्मोनियम लेकर गाने बैठ गये, हार्मोनियम न हुआ तो वैसे ही गाने लगे। कोई दूसरा गाता हुआ तो ताल देने लगे और जोश के मारे उठ-उठ बैठने लगे। कभी घूमने निकले और पानी आ गया तो कुर्ता उतारकर कन्धे पर डाल लिया, भीगते हुए झूमते चल दिये। लोग तमाशा देखते कि यह छ फुट का लम्बा-तगडा आदमी कौन है, जिसके लम्बे बालो से पानी टपक रहा है और जो बरसात की पर्वाह न करके मस्त चला जाता है।

मैं हां, उन्होंने सबेरे पर भी लिखी है। "जागो फिर एक बार" उनकी बडी प्रसिद्ध कविता है। प्रकृति की सुन्दरता के अलावा उन्होंने इतिहास की घटनाओ पर भी कविताए लिखी जैसे "राजा जय सिंह के नाम शिवाजी का पत्र।" उनकी एक कविता यमुना नदी पर है जिसमे कृष्ण जी की लीला की चर्चा है।

सेवा ये सब कविताए "मतवाला" मे छपी थी ?

मैं सब नहीं, बहुत सी "मतवाला" मे छपी थी। कुछ दूसरी पत्रिकाओ मे छपने लगी। लेकिन बहुत से पुरानी चाल के विद्वान उनकी कविताओ से बहुत नाराज रहते थे।

सेवा नाराज क्यो रहते थे ?

मैं पहले तो इसलिए कि निराला जी के विचार नये ढग के थे। जैसे, उन्होंने विधवा पर कविता लिखी, उसमें सहानुभूति प्रकट की। पुरानी चाल के लोगो को यह बात पसंद न थी। उनके घरो मे तो विधवा का जीवन रोते बीतता था। इसी तरह निराला जी ने भीख मागने वाले पर कविता लिखी .

सेवा भीख मागने वाले पर ?

मैं हां, सुनो, यह कविता तुम बहुत कुछ समझ लोगी।

वह आता—

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

पेट पीठ दोनो मिलकर है एक,

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठीभर दाने को—भूख मिटाने को,

मुह फटी-पुरानी झोली का फैलाता—

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी है सदा हाथ फैलाये,

बाये से वे मलते हुए पेट को चलते

और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढाये।

भूख से सूख ओठ जब जाते

दाता—भाग्य-विधाता से क्या पाते ?

घूट आसुओ के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सडक पर खडे हुए,

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अडे हुए।

छायावाद
क्या होता है ?

सेवा पर ऐसी, नये ढंग की, कविताओं से लोग नाराज क्यों होते थे ?

मैं नाराज इसलिए होते थे कि वे समझते थे कि इससे पुरानी चाल की कविता खत्म हो जायगी।

सेवा पुरानी चाल की कविता ? वह कैसी होती थी ?

मैं पुरानी चाल की कविता में ऊपरी चमक-दमक ज्यादा होती थी, सचाई और गहराई कम। किसी ने समस्या दी "बसन्त बरसौ परै"। अब एक कवि ने कवित्त बनाया

बसन तें बासन ते, सुमन-सुबासन ते
बैहर ते, बन ते, बसन्त बरसौ परै।

लोग बसन, बासन, बैहर, बसन्त में बार-बार 'ब' के दोहराये जाने से वाह-वाह कर उठते थे। इसी समस्या पर दूसरे कवि महोदय कहते

लेखक निराला जी मे और पुराने कवियो मे ।

मैं लड़ाई ही समझो । अखबारो मे उनके विरुद्ध धुआधार प्रचार हुआ । लोग कहते इन्हे तुक मिलाने की तमीज नही । कोई कहता इन्हे भाषा लिखना ही नही आता । कुछ मनचले लोग कवि-सम्मेलनो मे इनकी नकल करते, इनका स्वांग बनाते ।

लेखक निराला जी ने क्या किया ?

मैं निराला जी ने भी उन्हे मुहतोड जवाब दिये । "मतवाला मे एक स्तंभ होता था 'चाबुक' ।

लेखक चाबुक से तो घोडे हाके जाते है ।

मैं हा, और निराला जी अपने चाबुक से हिन्दी लेखको को हाकते थे । खूब खबर लेते थे उनकी । निराला जी के शत्रु तिलमिला कर रह जाते । जवाब न देते बन पड़ता था । बगले झाकते नजर आते थे । इसके अलावा निराला जी कवि-सम्मेलनों मे जाते थे । कहते थे—कविता खराब होगी समझ मे न आयेगी, तो लोग सुनेगे ही नही । लेकिन लोग उनकी कविताए बडे ध्यान से सुनते । कालेज के विद्यार्थियो ने तो उनका बहुत ही सम्मान होता ।

मैं पैसे तब कहां मिलते थे ? कविता में अब कुछ पैसे मिलने लगे है. पहले कहां मिलते थे ?

सेवा तो निराला जी खाते कहां से थे ?

मैं खाने-कमाने के लिए उन्हें दूसरा काम करना पड़ता था। कभी बंगला किताबों का अनुवाद कर रहे हैं तो कभी बाजार में खपत के लिए गद्य में मामूली किताबें लिख रहे हैं। इस तरह जोड़-तोड़ करके किसी तरह गाड़ी चलाते थे। गांव में उनके भतीजे थे। उन्हें भी रुपये भेजा करते थे।

सेवा नौकरी क्यों नहीं की निराला जी ने ?

मैं नौकरी करने से उनके जीवन में उतनी आजादी न रहती। कवि ठहरे। जब चाहा घूमे, जब चाहा आराम किया। फिर, नौकरी भी आसानी से थोड़े ही मिल जाती है।

सेवा उन्होंने कोशिश ही न की होगी।

मैं निराला जी के पास यूनिवर्सिटी की कोई डिग्री तो थी नहीं। डिग्री के बिना उनकी विद्वत्ता की कद्र करने वाले बहुत कम लोग थे। एक बार उन्होंने लखनऊ की एक पत्रिका में सम्पादक बनने के लिए अर्जी दी। उनसे पूछा गया—आपने कहां तक पढ़ा है ? आप एम० ए० जैसा काम कर सकते हैं ?

सेवा कौन सा काम ?

मैं प्रूफ पढने का काम। जैसे मैंने किताब लिखी तो प्रेस का आदमी छपे हुए पन्ने पढता है और छापे की गलतियां सुधारता है। इसी काम को प्रूफ रीडिंग कहते है। इसी काम के बारे मे पूछा गया था कि निराला जी कर सकते है या नही।

सेवा कलकत्ते से उन्होने लखनऊ अर्जी भेजी थी ?

मैं कलकत्ते से वह बनारस आये थे। वहां एक और बडे कवि रहते थे जयशंकर प्रसाद। वह निराला जी से बडा स्नेह करते थे। और लोग निराला जी का विरोध करते थे, वह निराला जी का समर्थन करते थे। निराला जी भी उन्हे बडे भाई की तरह मानते थे।

सेवा प्रसाद जी भी तो प्रसिद्ध कवि थे ?

मैं हां, वह भी प्रसिद्ध कवि थे। असल मे प्रसाद जी, निराला जी और इनकी तरह के कुछ और कवि नयी तरह की कविताए करते थे ?

सेवा क्या प्रसाद जी ने भी बडे-बडे बाल रखे थे ?

मैं नही, उन्होने बडे बाल नही रखे थे, लेकिन उनके साथ के एक दूसरे कवि, पंत जी ने, रखे थे। उनसे भी निराला जी की बडी मित्रता थी।

भुवन भौन छोडै नही, चौबे जी की आस।
याही सुख की आस मे, जात न काहू पास ।।

जहा भुवन दिखे, वही निराला जी ने दोहा कहना शुरू किया और हँसी के मारे अक्सर आधा ही कह पाते थे।

लखनऊ के सुन्दरबाग मोहल्ले मे हम लोगो के मित्र श्री छगालाल मालवीय रहते थे। निराला जी उधर से निकलते हुए अक्सर उनके यहा बैठकर गपशप करते थे। उनका छोटा लडका उन्हे ध्यान से देखता था। एक दिन उसने उनकी नकल उतारने की ठानी। उनकी छडी उठाकर उन्ही की तरह धीरे-धीरे झूमकर चलते हुए उसने कमरे का चक्कर लगाया। निराला जी अपनी नकल देख कर बहुत प्रसन्न हुए और बच्चे को शाबासी दी।

बच्चो जैसे उनके कोमल हृदय मे अपार दया थी। उन्होने अपनी एक कविता मे स्वामी विवेकानन्द के बारे मे लिखा है कि गाव मे उन्हे रोती हुई लडकी मिली जिसका घडा फूट गया था। स्वामी जी ने उसे घडा खरीद दिया। एक बुढिया बीमार थी। कोई उसकी देखभाल करने वाला न था। स्वामी जी ने उसकी उसी तरह देखभाल की जैसे कोई पुत्र अपनी

मैं नयी तरह की कविता को लोग 'छायावाद' कहने लगे थे। जो समझ में न आये, वह छायावाद। पहले यह नाम मजाक में रखा गया, आगे चल कर सभी लोग नयी कविता को छायावाद कहने लगे। इस तरह की कविता करने वालों को लोग छायावादी कहते।

सेवा हां तो आपस में लड़ाई कैसे चल गयी ?

मैं बात यह हुई कि पंत जी का कविता-संग्रह छपा। उसका नाम था "पल्लव"।

सेवा पल्लव माने पत्ते।

मैं हां, पल्लव माने पत्ते। जैसे पेड़ में नये पत्ते निकलते हैं, वैसे ही। "पल्लव" की भूमिका में पंत जी ने निराला जी की नुक्ताचीनी की। लिखा कि निराला जी का मुक्त छंद गाया नहीं जा सकता। इसके सिवा उन्होंने हिन्दी के बहुत से शब्दों के बारे में लिखा कि उनमें मिठास नहीं है। सूरदास जैसे पुराने कवियों की आलोचना की।

सेवा . वैसे ही निराला जी से निकला "परिमल"।

मैं . अब वह गाव से लखनऊ आ गये। वहा वह गगा पुस्तक माला कार्यालय मे काम करने लगे।

सेवा उन्हे नौकरी मिल गयी ?

मैं नौकरी सी ही थी। गगा पुस्तक माला कार्यालय से एक पत्रिका निकलती थी "सुधा"।

सेवा सुधा तो पडोस वाली जीजी का नाम है।

मैं लोग लडकियो की तरह पत्रिकाओ का भी प्यारा-प्यारा नाम रखते थे। सुधा माने ?

सेवा सुधा माने अमृत।

मैं हा, जैसे अमृत मीठा होता है ..

सेवा निराला जी ने अमृत पिया था ?

मैं निराला जी ने तो हलाहल पिया था, लेकिन लिखते थे अमृत।

सेवा इस बात का मतलब न समझी लेकिन न उसने पूछा, न मैंने समझाने की कोशिश की। मैं अपनी बात कहता गया "सुधा" मे निराला जी की कविताए छपती थी, लेख निकलते थे। इस मजदूरी से किसी तरह काम चलता था।

सेवा मजदूरी कैसी ? वह तो लिखने का काम करते थे।

मै नही, अव वह अपने एक मित्र के यहा रहते है। इलाहावाद मे एक मोहल्ला है—दारागज। उसकी एक गली मे एक वहुत बडी कोठी है।

सेवा उसी मे रहते है ?

मै नहीं, उसमे तो कोई अमीर आदमी रहता है। उसके सामने एक मामूली दो-मजिला मकान है। उसी मे निराला जी नीचे की बैठक मे रहते है।

सेवा यह घर पहलेवाले से अच्छा होगा ?

मै हा, पहलेवाले से अच्छा है, फिर भी वह कमरा निराला जी के लिए बहुत छोटा है। पहले उसमे विजली का पखा न था। तब बहुत तकलीफ होती थी। पास मे सडास था। उससे वदबू आती थी। निराला जी लुगी वाधे गली मे टहला करते थे।

सेवा आप उन्हे यहा क्यो नही बुला लेते ?

मै कोशिश तो वहुत की। दो वार निराला जी यहा आये भी। लेकिन आगरा उन्हे अच्छा नही लगता। मुझे ही अच्छा नही लगता, उन्हे क्या लगता।

सेवा क्यो आपको आगरा अच्छा क्यो नहीं लगता ?

मै जो आदमी अवध की नदियो और घने आम के वागो के वीच रह चुका है, उसे दूसरी जगह अच्छा

सेवा लडकी के क्यो जमाई ?

मैं उसके सर मे जुए पडे थे और वह अपने वाल साफ न रखती थी ।

सेवा कहा से आई थी ?

मैं वह निराला जी की ससुराल से आई थी ।

सेवा उनकी ससुराल कहा थी ?

मैं अभी तुझे बताया न था कि निराला जी का व्याह डलमऊ मे हुआ था ? वहा उनकी सास थीं, साले थे सलहज थी

सेवा सलहज कौन ?

मैं सलहज कहते है साले की पत्नी को । निराला जी ने उनके नाम एक किताब भी समर्पित की है । इसमें सलहज का वर्णन करते हुए लिखा है कि उनके मुह से बच्चो का काजल लग जाता था ।

वह आता—
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को—भूख मिटाने को,
मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता—
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।

भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता—भाग्य-विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

रेखा : यह कविता तो बहुत सरल है। सब समझ में आ गयी। आप इसे लिखा दीजिए। मैं अपनी कक्षा में सुनाऊँगी। ऐसा लगता है जैसे सामने भिखारी अपने बच्चों के साथ खड़ा है।

सेवा : क्यों ?

मैं : बीमार हो गयी, और निराला जी के पास इतने रुपये न थे कि उनका अच्छी तरह इलाज कराते। सरोज पर उन्होंने एक बड़ी सुन्दर कविता लिखी।

सेवा : मुझे सुनाइये न !

मैं : उन्होंने लिखा है :

> जीवित कविते, शत शर-जर्जर
> छोड़ कर पिता को पृथ्वी पर
> तू गयी स्वर्ग, क्या यह विचार—
> जब पिता करेंगे मार्ग पार
> यह अक्षम अति, तब मैं सक्षम
> तारूँगी कर गह दुस्तर तम ?

यानी निराला जी के लिए सरोज जीती-जागती कविता के समान थी। वह सोचते हैं कि सरोज पिता को छोड़कर

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज, जो नहीं कही।

सेवा : सब अपने बारे में ही लिखा और अपनी लड़की के बारे में कुछ नहीं लिखा ?

मैं : लिखा क्यों नहीं। देखो यहां लिखा है, "तू सवा साल की जब कोमल।" अभी वह मां का मुंह पहचान रही थी कि मां का देहान्त हो गया। फिर लिखा है—"तू नानी की गोद जा पली।" वहां खेलती रही। भाई की मार भी खायी। गंगा के किनारे रेत पर खेली। निराला जी उसे उंगली प[illegible] [illegible] ले जाते थे।

सेवा : नदी किनारे रेत पर खेलने में तो [illegible] मजा आता होगा। निराला जी भी खेलने जाते [illegible]

उसमे बहुत से लेखक इकट्ठा हुए। कुछ नेता लोग भी आये।

सेवा . गाधी टोपी वाले नेता ?

मै . वही। ये नेता तो मच पर बैठे और एक बूढे और प्रसिद्ध हिन्दी लेखक नीचे बैठे। इस पर निराला जी बिगड गये और उठकर वही नेताओ को फटकारा।

सेवा निराला जी हमेशा लडाई-झगडा ही किया करते थे ?

मै जरूरत पडने पर लडाई-झगडा भी करते थे जैसे चतुरी चमार के लडके के लिए उन्होने गाववालो से लडाई मोल ली थी। वैसे, उन्हे हसी-मजाक बहुत पसन्द था।

सेवा निराला जी हँसते भी थे ?

मै बहुत जोर से। तुमने यह क्यो सोचा कि वह हँसते न होगे ?

सेवा वह गरीबी मे रहते थे, लोग उनसे नाराज रहते थे, फिर चतुरी चमार और वह पगली, ऐसे गरीबो का उन्हे ध्यान रहता था, फिर हँसते कैसे होगे ?

मै निराला जी के सामने कोई झूठी बाते बनाता था, तो उसका मजाक उडाते थे। इस तरह वह हँसते थे। एक बार निराला जी के यहा एक कवि आये।

रत्नावली से उनका व्याह हुआ था। वह उसे मायके न जाने देते थे। एक बार वह तुलसीदास से बिना पूछे हुए अपने भाई के साथ चली गयी। बस, तुलसीदास भी पीछे-पीछे ससुराल पहुच गये। इस पर रत्नावली ने उन्हे बहुत डाटा। तब तुलसीदास जी राम के भक्त हो गये और कविता करने लगे।

सेवा : यह कहानी तो हमारी हिन्दी की बहन जी ने क्लास मे सुनाई थी।

मैं : और निराला जी ने एक कविता लिखी है "राम की शक्ति पूजा"। राम और सीता के वनवास की कहानी सुनी है न?

सेवा : हा, और साथ मे लक्ष्मण जी भी गये थे।

मैं : हा तो सीता जी को रावण उठा ले गया था। जब राम लड़ने गये तब पहले वह रावण से जीते नहीं।

सेवा : यह कहानी तो रामायण मे लिखी है फिर निराला जी ने इसे क्यो लिखा?

मैं : निराला जी ने इसमे दिखाया है कि मनुष्य को कमजोर न होना चाहिए। शक्तिशाली बनने के लिए साधना करनी पड़ती है। राम ने शक्ति की पूजा की और पूजा पूरी करने पर उन्होने रावण को जीत लिया।

सेवा : तो क्या पूजा करने से शक्ति आ जाती है?

में वह तो पुरानी कहानी है। मतलब यह कि आदमी कोशिश करता रहे, हिम्मत न हारे तो वह सफल हो जाता है। असल में राम की दुविधा और हार का वर्णन करते हुए निराला जी ने अपने ही दुखी जीवन की तस्वीर खींची है। लिखा है

रह रह उठने को हो रहा विकल वह बार-बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

मेरा इस कविता की समझने तो बड़ा कमी है लेकिन सुनने में बड़ी अच्छी लगती है।

म हां, सुनो, इन पंक्तियों में कितना जोर है

है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार।
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,

सेवा लेकिन राम तो हार गये थे, फिर कविता जोरदार कैसे हो गयी ?

समझ लो, जीवन की जो कठिनाइया है वे तो अधेरी रात है। जैसे राम के चारो ओर अधेरा था, वैसे ही यहा निराला जी के चारो ओर है। लेकिन हार न मान कर वह अपने रास्ते चलते ही गये। रास्ते मे जो पत्थर चुभे वे कमल जैसे मुलायम लगे।

सेवा सो कैसे ?

मै जब मनुष्य कोई काम करने का विचार करता है और उसका सारा ध्यान उस काम मे ही लगा रहता है, तब उसे इस बात की चिन्ता नही रहती कि पैर मे ठोकर लग रही है या काटे चुभ रहे है। इसलिए रात का अधेरा पार करते-करते कवि थक गया, फिर भी सवेरे की किरणे देख कर, यानी अपने उद्देश्य तक पहुच कर वह प्रसन्न हो जाता है।

सेवा लेकिन थक क्यो गये थे ? मुझ से कहो तो दिन भर खेला करू, फिर भी न थकू।

मैं लडकियां खेलने और वात करने मे कभी नही थकती। दिन मे पढती कितनी देर हो ?

सेवा पढना तो मुश्किल काम है। लेकिन निराला जी को पढना थोडे ही पडता था।

मैं क्यो ? पढना क्यो न पडता था ? क्या नाम हो जाने पर कोई अच्छा लेखक पढना वद कर देता है ?

सेवा : इम्तहान न देना हो तो क्यों पढ़ें ?

मैं : असली पढ़ाई तो इम्तहान के बाद शुरू होती है। लेखक पढ़ते हैं—अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए, पहले से और भी अच्छा लिखने के लिए।

सेवा : निराला जी क्या पढ़ते थे ?

मैं : निराला जी संस्कृत पढ़ते थे। जब लखनऊ में वह और हम साथ रहते थे, तब उनका पढ़ना देखा था। तभी कालिदास पढ़ते थे। कुमारसंभव और [illegible] के श्लोक बार-बार पढ़ते थे।

मैं खाना ज्यादातर होटल मे खाते थे। हा, कभी दोस्तो की दावत करनी हुई तो खुद भी बनाते थे।

सेवा बढिया खाना बनाते थे ?

मैं तेरे जैसा बनाते थे। हा, कभी तरकारी जल गयी तो कहते थे बहुत सोधी बनी है।

इस पर सेवा हसने लगी और बोली—मेरी तरकारी थोडे ही जलती है।

इसके बाद उसने पूछा रोटिया बेल लेते थे ?

मैं रोटिया हाथ से बनाते थे—मोटी-मोटी। दाल-साग बहुत अच्छा पकाते थे। हा, जब गाव मे रहते थे तब रोज बनाते थे। और खाने के लिए कभी-कभी चमारो को भी बुला लेते थे।

सेवा चमारो को ?

मैं हा, क्यो ? क्या चमार आदमी नही होते ?

सेवा बहुत से लोग तो उन्हे छूते भी नही है।

मैं हमारे समाज मे इस तरह की बहुत सी बुराइया है। निराला जी उन्हे दूर करने की बराबर कोशिश करते रहे। उन्होने एक चमार पर कहानी लिखी है।

सेवा वह सचमुच का चमार था ?

मैं नही तो क्या झूठमूठ का ? उनके गाव मे रहता था। उनका नाम है चतुरी चमार।

मेवा उन्ही के पडोस मे रहता होगा ?

मैं पडितो के पडोस मे बेचारा कैसे रहता ? चमार नीची जात के समझे जाते थे। इसलिए उनके घर शहर के सबसे गन्दे हिस्से में होते थे। देखो यह है उनका एक कहानी संग्रह। इसकी पहली कहानी है "चतुरी चमार"। इसे फुर्सत मे पढना। इसके शुरु मे ही लिखा है, "मेरे नही, मेरे पिता जी के, बल्कि उनके भी पूर्वजो के मकान के पिछवाडे, कुछ फासले पर, जहा से होकर कई और मकानो के नीचे और ऊपर वाले पनालो का, बरसात और दिन-रात का, शुद्धाशुद्ध जल बहता है, ढाल से कुछ ऊंचे एक बगल चतुरी चमार का पुश्तैनी मकान है।"

गदी जगह रहने वालो पर कहानिया क्यो लिखीं ?

सेवा वह चमार तो गदी जगह रहता था। निराला जी ने उस पर कहानी क्यो लिखी ?

मैं इसलिए कि वह गदगी दूर करना चाहते थे। इन गरीब आदमियो के साथ जो अन्याय होता था, उसकी ओर सब लोगो का ध्यान खीचना चाहते थे। फिर, गदगी मे रहते हुए क्या किसी आदमी मे अच्छा-इया नही होती ?

सेवा चतुरी मे कौन सी अच्छाइया थी ?

मैं पहली तो यही कि वह अपना काम बडी ईमानदारी से करता था। जूते मजबूत बनाता था। निराला जी ने जूतो की तारीफ करते हुए लिखा है कि पासी हिरन, चौगडे और बनैले सुअर के पीछे दौडते हुए शिकार करते थे, किसान अरहर की ठूठियो पर ढोर भगाते दौडते थे। अरहर की ठूठिया देखी है ? नगे

पैर मे धस जाये तो बस घाव ही कर दे। जूतो की बदौलत किसान इन्हे रौदते हुए चले जाते थे, कटीली झाडियो की परवाह भी न करते थे, लडके काटो से रखवाये बागो मे दौड जाते थे।

सेवा : रखवारे क्या ?

मै : बागो के आसपास कंटीले पेड, झाडियां, बबूल की काटो वाली डालियां रख दी जाती थी जिससे कोई या जानवर आसानी से घुस न पाये। जूते बनाने के अलावा चतुरी को बहुत से भजन याद थे और वह अपने साथियो की मंडली मे गाता भी था। एक बार निराला जी के घर के दरवाजे पर उस मंडली ने भजन गाकर उन्हे सुनाये भी थे।

सेवा : निराला जी तो बहुत पढे थे। क्या उन्हे देहाती भजन अच्छे लगे होगे ?

मै : चतुरी को कबीर के पद याद थे। ये पद तो ऊंची कक्षाओ मे भी पढाये जाते है।

मै बेचारा पढा-लिखा नही था, लेकिन अपने पुरखो से बहुत-सी विद्या मुहजबानी सीख ली थी। अब उसके मन मे इच्छा हुई कि उसका लडका पढ-लिख जाय।

सेवा उसके लडका भी था ?

मै क्यो नही ! नाम था—अर्जुनवा। निराला जी ने उसे पढाना शुरू किया।

सेवा वह पढ गया ?

मै हा, पढ गया—अपनी चिट्ठी-पत्री लिखने भर को। लेकिन उसे पढाने मे निराला जी को कई कठिनाइयो का सामना करना पडा।

सेवा कैसी कठिनाइयो का ?

मै वह कुछ अक्षर ठीक-ठीक बोल न पाता था, जैसे 'ण'। गुण को गुड कहता था।

इस पर सेवा हसने लगी। मैने कहा ऐसे ही निराला जी के लडके रामकृष्ण भी हसने लगे थे। इस पर निराला जी ने उन्हे नानी के पास भेज दिया था।

अब सेवा चुप हो गयी, कुछ गभीर भी। मैने उसे समझाया दूसरो की कमजोरियो पर हँसना न चाहिए। हम मे भी कमजोरिया हो सकती है जिन्हे शायद हम जानते न हो।

मै क्या करती बेचारी। कमानेवाला कोई था नही। भीख मागकर अपना और बच्चे का पेट पालती थी। हिन्दुस्तान मे अब भी लाखो गरीब ऐसे है जो सडको और फुटपाथो पर पडे रहते है।

मैना जब पानी बरसता होगा तब ?

मै तब वह किसी मकान के बराम्दे मे बैठ जाती थी। ऐसे ही एक दिन पानी बरसा था। पगली बराम्दे मे अपने बच्चे को सुलाकर कही चली गयी थी। तभी वह बच्चा लुढककर नीचे गिर पडा।

मैना च-च च। बेचारे के बडी चोट लगी होगी ?

मै चोट तो लगी ही! वह जोर से चीख उठा। लेकिन होटल के लोगो मे से कोई उसे उठाने न आया।

मैना निराला जी जरूर गये होगे।

मै तू ने कैसे जाना ?

मैना उनमे बडी दया थी। थी न ? वह चमार को नहलाते थे। पगली के बच्चे को न उठाते ?

मै तूने ठीक समझा। उनके हृदय मे गरीबो के लिए बडी सहानुभूति है। देखो इस कहानी मे यह लिखा है मैने उस बच्चे को दौडकर उठा लिया।"

तब मैना मारे खुशी के तालियाँ बजाने लगी और बोली—मैने कहा था न ?

मै हा, मैने बताया न, अपने काम लायक पढ गया था।

सेवा · और निराला जी गाव मे ही रहे ?

मै वह लखनऊ मे आकर रहने लगे।

सेवा वहा उन्होने कहानिया नहा लिखी ?

मै लिखी क्यो नही ? अप्सरा, अलका, प्रभावती वगैरह कई उपन्यास लिखे। और कहानिया भी कई लिखी।

सेवा वैसी कहानी जैसी चतुरी चमार पर लिखी थी ?

मै हा, वैसी भी। लखनऊ की एक पगली पर उन्होने कहानी लिखी।

सेवा सचमुच की पगली देखी थी ?

मै हा, जिस होटल मे वह रहते थे, उसी के सामने सडक पर वह बैठी रहती थी।

सेवा कहानी का नाम है "पगली" ?

मै नही "देवी"।

सेवा देवी क्यो ?

मै पगली मे देवी के गुण थे। उसके एक छोटा बच्चा था जिसे वह बहुत प्यार करती थी।

सेवा लेकिन बच्चे को लेकर सडक पर कैसे रहती थी ?

मैं क्या करती बेचारी। कमानेवाला कोई था नहीं। भीख मांगकर अपना और बच्चे का पेट पालती थी। हिन्दुस्तान में अब भी लाखों गरीब ऐसे हैं जो सड़कों और फुटपाथों पर पड़े रहते हैं।

मेवा जब पानी बरसता होगा तब?

मैं तब वह किसी मकान के बरामदे में बैठ जाती थी। ऐसे ही एक दिन पानी बरसा था। पगली बरामदे में अपने बच्चे को सुलाकर कहीं चली गयी थी। तभी वह बच्चा लुढ़ककर नीचे गिर पड़ा।

मेवा च-च च। बेचारे के बड़ी चोट लगी होगी?

मैं चोट तो लगी ही! वह जोर से चीख उठा। लेकिन होटल के लोगों में से कोई उसे उठाने न आया।

मेवा निराला जी जरूर गये होंगे।

मैं तूने कैसे जाना?

मेवा उनमें बड़ी दया थी। थी न? वह चमार को उठाते थे। पगली के बच्चे को न उठाते?

मैं तूने ठीक समझा। उनके हृदय में गरीबों के लिए बड़ी सहानुभूति है। देखो इस कहानी में यह लिखा है "मैंने उस बच्चे को दौड़कर उठा लिया।"

तब मेवा मारे खुशी के ताली बजाने लगी और बोली—मैंने कहा था न?

मै आगे पढ़ता गया "मेरे एक मित्र ने कहा—अरे यह गदा रहता है। मैं गोद मे लेकर उसे हिलाने लगा।"

सेवा से न रहा गया। वह उठकर खडी हो गयी और ताली बजाकर कहने लगी—अहाहा! निराला जी बच्चा खिलाने लगे!

फिर रुककर कुछ सदेह से बोली उन्हे बच्चा खिलाना आता था?

सेवा अपने को बच्चे खिलाने मे बहुत चतुर समझती है और फुरसत मे पडोसियो के बच्चे खिलाया करती है।

मैने कहा दिल मे प्रेम हो तो बच्चे खिलाना क्या मुश्किल है। देखो निराला जी ने आगे क्या लिखा है "उतनी चोट खाया हुआ बच्चा चुप हो गया, क्योकि इतना आराम उसे कभी नही मिला। उसकी मा इस तरह बच्चे को सुख के झूले मे झुलाना नही जानती। वह पलके मूदकर बात की बात मे सो गया।"

सेवा लेकिन निराला जी उसे रोज थोडे खिलाते होगे? जाडे मे उसे सर्दी लगती होगी?

मै हां, एक रात को निराला जी ने उस बच्चे की

आवाज सुनी। कू-कू कर रहा था। आधी रात हो गयी थी। सब लोग सो गये थे। निराला जी बाहर निकले तो क्या देखा? उन्हीं के शब्दों में सुनो "एक पाया हुआ मामूली काला कंबल ओढ़े बच्चे को लिये पगली फुटपाथ पर पड़ी है। जब उसे दुनिया का, अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है, तब हाड़ तक छिद जानेवाले जाड़े में जागकर वह ऐसे करुण स्वर से रोती है। जमीन पर एक फटी-पुरानी जोग में भीगी कथरी बिछी, ऊपर [illegible] कंबल।"

ऐसा बेचारी को बड़ी ठंड लगती होगी। निराला जी ने उसे ओढ़ने को नहीं दिया?

मैं निराला जी के पास जब भी [illegible] थे, वह दूसरों को [illegible] [illegible] बाजार में [illegible] [illegible] [illegible] निराला जी ने [illegible] [illegible]

से खातिर करेगे। इस पर उन महाशय ने अखबार मे लिखा—यह जानकर बडी खुशी हुई कि निराला जी को पहनने के लिए जूते मिल गये, वह तो नगे पैरो चलते थे या चप्पलो से काम चलाते थे।

सेवा फिर निराला जी ने उनको मारा था ?

मैं कहा मारा ? जब वह लखनऊ आये तो निराला जी ने केले, सन्तरे वगैरह से उनका खूब सत्कार किया।

सेवा और गुस्सा भूल गये ?

मैं निराला जी का गुस्सा बहुत थोड़ी देर रहता था। फिर हिन्दी लेखको को तो वह बहुत प्यार करते थे। लखनऊ मे जितने नौजवान लेखक थे, सब निराला जी के पास खिचे चले आते थे। तुम्हारे चाचा अमृत लाल नागर भी इन्ही मे थे। अब देखो, वह प्रसिद्ध लेखक हो गये है। निराला जी के पास पैसे हो तो वह इन नौजवान लेखको को आम, खरबूजे, रसगुल्ले वगैरह खूब खिलाते थे, बडे लेखको से उनका परिचय कराते, उनकी लिखी हुई चीजे पढकर उन्हे सलाह देते, उनके लेख छपाने मे मदद करते। लेकिन जिन लोगो मे बडप्पन का घमड होता था, उनकी वह जरा भी पर्वाह न करते थे।

मेवा : क्यों ? वह भी तो बड़े आदमी थे। फिर अपने जैसे बड़े आदमियों की परवाह क्यों न करते थे ?

मैं : कुछ लोग तो अपनी विद्या या गुण से बड़े होते हैं। कुछ लोग दूसरों को सताकर रुपया इकट्ठा करते हैं और उस रुपये के बल पर बड़े बन जाते हैं। जो सचमुच बड़े होते थे, निराला जी उन्हीं की इज्जत करते थे। जो रुपयों के बल पर बड़े होते थे, उनके सामने वह जरा भी न झुकते थे। एक बार एक राजा साहब लखनऊ आये। उनसे मिलने के लिए एक प्रकाशक के घर सभा हुई जिसमें निराला जी भी थे। जब राजा साहब आये तो सब लोग उठकर खड़े हो गये।

मेवा : जैसे स्कूल में बहन जी के आने पर लड़कियां खड़ी हो जाती हैं ?

मैं : हां, बस वैसे ही। लेकिन निराला जी आराम से बैठे रहे।

के यहा नौकरी कर चुके थे। वह सब का परिचय दे रहे थे—गरीब परवर ! इनका नाम यह है। जब वह निराला जी के पास आये तो निराला जी खुद उठकर खडे हो गये और अपना परिचय देते हुए बोले—हम वह है, हम वह है जिनके दादा के दादा के दादा की पालकी आपके दादा के दादा के दादा ने उठायी थी ?

सेवा किसने पालकी उठायी थी ?

मैं देखो, पहले एक राजा थे छत्रसाल। उनके यहा एक प्रसिद्ध कवि थे जिनका नाम था भूषण। उनका सम्मान करने के लिए राजा छत्रसाल ने उनकी पालकी उठायी थी।

सेवा तो इससे निराला जी को क्या ?

मैं निराला जी भी कवि है। इसलिए उन्होंने अपने को भूषण के खानदान मे गिना। इसी तरह राजा साहब को छत्रसाल के खानदान मे रखा। उनका मतलब यह था कि राजाओ को कवियो की पालकी उठानी चाहिए, यानी उनका सम्मान करना चाहिए। इसीलिए वह राजा साहब के आने पर अपनी जगह से न उठे थे।

सेवा अच्छा, यह बात थी !

मैं हा, निराला जी लेखक का दर्जा बहुत ऊचा मानते थे। एक बार फैजाबाद मे एक सम्मेलन हुआ।

उसमे बहुत से लेखक इकट्ठा हुए। कुछ नेता लोग भी आये।

सेवा . गाधी टोपी वाले नेता ?

मैं . वही। ये नेता तो मच पर बैठे और एक बूढे और प्रसिद्ध हिन्दी लेखक नीचे बैठे। इस पर निराला जी बिगड गये और उठकर वही नेताओ को फटकारा।

सेवा निराला जी हमेशा लडाई-झगडा ही किया करते थे ?

मैं जरूरत पडने पर लडाई-झगडा भी करते थे जैसे चतुरी चमार के लडके के लिए उन्होने गाववालो से लडाई मोल ली थी। वैसे, उन्हे हसी-मजाक बहुत पसन्द था।

सेवा निराला जी हँसते भी थे ?

मैं बहुत जोर से। तुमने यह क्यो सोचा कि वह हँसते न होगे ?

सेवा वह गरीबी मे रहते थे, लोग उनसे नाराज रहते थे, फिर चतुरी चमार और वह पगली, ऐसे गरीबो का उन्हे ध्यान रहता था, फिर हँसते कैसे होगे ?

मैं निराला जी के सामने कोई झूठी बाते बनाता था, तो उसका मजाक उडाते थे। इस तरह वह हँसते थे। एक बार निराला जी के यहा एक कवि आये।

वह कविता अ-अ करके यो गाते थे कि सुननेवाले को हसी आ जाये, लेकिन उन्हे इसका पता न था। वह अपने को बहुत अच्छा कवि समझते थे और अपनी राय मे कविता भी बहुत अच्छी तरह पढते थे। वह निराला जी को कविता सुनाने लगे। निराला जी पालथी मार-कर बैठ गये और पैरो पर ताल देने लगे। लेकिन कवि जी फिर भी न समझे कि उनका मजाक उडाया जा रहा है।

सेवा हसने लगी।
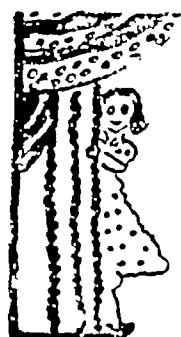
निराला जी का स्वभाव कैसा था ?

सेवा निराला जी का स्वभाव कैसा था ?

मैं अरे ! अब भी तेरी समझ में नहीं आया ? अर्जुनवा और पगली के बच्चे के लिए उनके दिल में जैसी दया थी और गरीबों को दुख पहुँचानेवालों के लिए जैसा क्रोध था, वह जानने के बाद भी तू उनके स्वभाव के बारे में पूछती है ? वह कितने हसमुख थे उसका एक उदाहरण तुझे दे ही चुका हूं। हां, निराला जी कभी-कभी अपना मजाक उड़ाने में भी नहीं चूकते थे।

सेवा अपना मजाक कैसे उड़ाते थे ?

मैं सुन। एक बार निराला जी ने अपना ठाट-बाट बनाया। तब वह लड़के थे। ससुराल जा रहे थे। बाद को जब बड़े हो गये तो उन बातों को सोचकर हंसी आती थी। "कुल्ली भाट" नाम की पुस्तक में उन्होंने अपनी ससुराल यात्रा का वर्णन किया है।

सेवा क्या लिखा है ?

मैं . गर्मियो की दोपहर में वह स्टेशन चले। बगाली बाबुओ की तरह बने-ठने थे। लू के झोकों में उनका ठाट बिगड गया। एक जगह ककड़ो मे ठोकर लगी तो जूते ने मुह फैला दिया।

सेवा उसे चतुरी ने न बनाया होगा !

मैं ठीक। वह शहर के बाबुओ का दिखावटी जूता था। देहात मे क्या चले ? फिर हवा चली। छाता उलटकर दूसरी तरफ को तन गया।

इस पर सेवा खूब हसी। उसकी हसी बंद होने के बाद मैंने उसे आगे की बात सुनायी—रास्ते मे बहुत से बेर और बबूल के पेड मिले। बगालियो की तरह ढीली धोती बाधे थे। वह उडकर एक बेर की डाल से उलझ गयी। काटे भी चुभे और धोती भी फट गयी।

सेवा फिर निराला जी स्टेशन पहुचे ?

मैं पहुँचे—बडी दौड-धूप करके। लेकिन इससे पहले एक घटना और हो गयी। गाव के गलियारे में एक जगह गड्ढा था। उस मे उनका पैर पड गया। मुह मे क्रीम लगाया था, उस पर धूल चढ गयी। लिखा है, "पैर उठाकर सामने रखते ही, लीक के गड्ढे में डेढ हाथ खाले गया, और मै गुडी-गुडता के डडे की

तरह गुडा, लेकिन स्पोर्ट्समैन था, झडबेर की झाडी तक पहुचते-पहुंचते अड गया।"

सेवा यह स्पोर्ट्समैन क्या ?

मै : स्पोर्ट्समैन का मतलब खेलने-कूदने वाला।

सेवा . तो क्या निराला जी खेलते-कूदते भी थे ?

मै अरे निराला जी को मुसीबतो ने मिटा दिया नही तो उन जैसा मस्त आदमी दूसरा नही था। लडकपन मे फुटबॉल का बहुत शौक था। जब अवस्था दूसरी हो गयी, तब भी लखनऊ मे कोई फुटबाल का अच्छा मैच हो तो देखने जरूर पहुच जाते थे। कही फील्ड मे लडके खेल रहे हो तो किक लगाने खुद भी पहुच जाते थे। कही दगल हो तो निराला जी टिकट लिये कुश्ती देखने चले जा रहे है। कभी गाने की तबियत हुई तो हार्मोनियम लेकर गाने बैठ गये, हार्मोनियम न हुआ तो वैसे ही गाने लगे। कोई दूसरा गाता हुआ तो ताल देने लगे और जोश के मारे उठ-उठ बैठने लगे। कभी घूमने निकले और पानी आ गया तो कुर्ता उतारकर कन्धे पर डाल लिया, भीगते हुए झूमते चल दिये। लोग तमाशा देखते कि यह छ फुट का लम्बा-तगडा आदमी कौन है, जिसके लम्बे बालो से पानी टपक रहा है और जो बरसात की पर्वाह न करके मस्त चला जाता है।

लम्बे बाल रखाये, कभी गर्मी लगी तो सिर घुटवा । कभी घर मे अखबारो, पत्रिकाओ, फटे कागजो

महाकवि महापुरुष

र लगा, कभी धुन हुई तो झाडू लगायी और पानी कर चक कर दिया कभी रात को नीद न आयी

तरह गुडा, लेकिन स्पोर्ट्समैन था, झडबेर की झाडी तक पहुचते-पहुंचते अड गया ।"

सेवा यह स्पोर्ट्समैन क्या ?

मैं · स्पोर्ट्समैन का मतलब खेलने-कूदने वाला ।

सेवा · तो क्या निराला जी खेलते-कूदते भी थे ?

मै अरे निराला जी को मुसीबतो ने मिटा दिया नही तो उन जैसा मस्त आदमी दूसरा नही था । लड़कपन मे फुटबॉल का बहुत शौक था । जब अवस्था दूसरी हो गयी, तब भी लखनऊ मे कोई फुटबाल का अच्छा मैच हो तो देखने जरूर पहुच जाते थे । कही फील्ड मे लडके खेल रहे हो तो किक लगाने खुद भी पहुच जाते थे । कही दगल हो तो निराला जी टिकट लिये कुश्ती देखने चले जा रहे है । कभी गाने की तबियत हुई तो हार्मोनियम लेकर गाने बैठ गये, हार्मोनियम न हुआ तो वैसे ही गाने लगे । कोई दूसरा गाता हुआ तो ताल देने लगे और जोश के मारे उठ-उठ बैठने लगे । कभी घूमने निकले और पानी आ गया तो कुर्ता उतारकर कन्धे पर डाल लिया, भीगते हुए झूमते चल दिये । लोग तमाशा देखते कि यह छ फुट का लम्बा-तगडा आदमी कौन है, जिसके लम्बे बालो से पानी टपक रहा है और जो बरसात की पर्वाह न करके मस्त चला जाता है ।

कभी लम्बे बाल रखाये, कभी गर्मी लगी तो सिर घुटवा दिया। कभी घर मे अखबारो, पत्रिकाओ, फटे कागजो
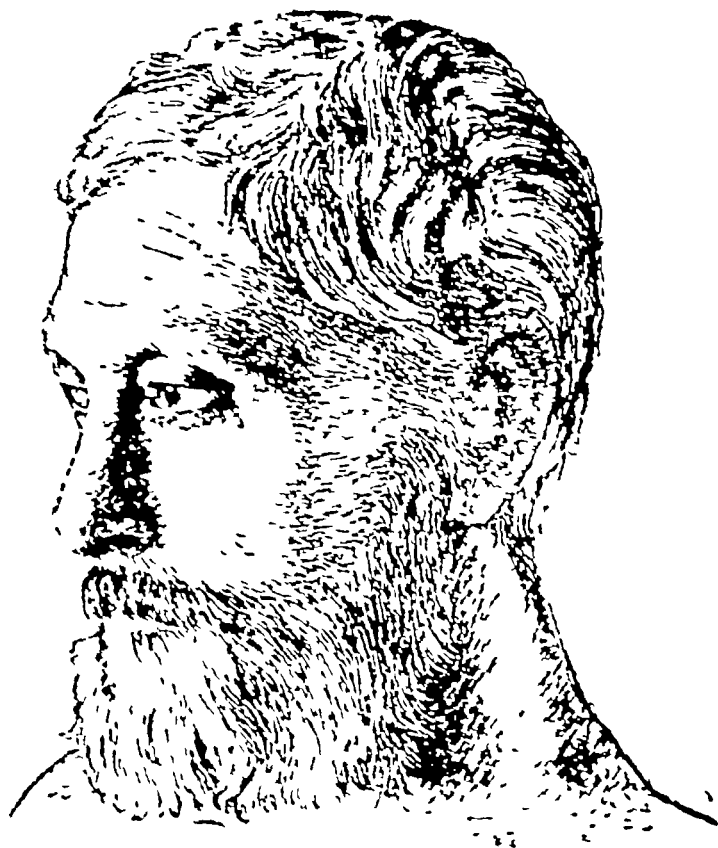
महाकवि महापुरुष

का ढेर लगा, कभी धुन हुई तो झाडू लगायी और पानी से धोकर चक कर दिया, कभी रात को नीद न आयी

तो दो वजे तक छत पर टहलते रहे, कभी दोपहर को सो गये तो खोपडी पर ढोल बजा करे, वह खर्राटे लेते रहे। कभी ठढाई की सूझी तो कहा—आधा घडा बनाओ। और पीनेवाले सिर्फ दो आदमी—वह और मै। कभी होटल मे खाना खा रहे है, कभी हाथ से पका रहे है, कभी हमारी बनायी रोटियो मे हिस्सा लगा रहे है। कभी लिखने बैठे तो सबेरे से लिखते-लिखते दोपहर कर दी, कभी गप लगाने बैठे तो लिखने-पढने का ध्यान ही न रहा।

सेवा क्या इसीलिए उनका नाम निराला पडा था ?

मै ऐसा ही समझ लो। लखनऊ मे उनका जीवन वडी मस्ती का था। खूब अच्छी-अच्छी किताबे लिखी, फिर अपने लडके का व्याह किया। कुछ दिन वाद उनकी वहू न रही। इसके वाद उनकी तवियत खराब रहने लगी। उन दिनो लडाई चल रही थी।

सेवा कौन सी लडाई ?

मै योरप मे एक देश है जर्मनी। वहा हिटलर ने अपनी फौजी हुकूमत कायम की थी। उसने रूस और दूसरे कई देशो पर हमला किया। भारी लडाई हुई। हिटलर हार गया। लेकिन लाखो आदमी मारे गये। उन

दिनो चीजे बहुत महगी हो गयी थी। निराला जी भी बहुत तगी मे थे। वह लखनऊ छोडकर इलाहाबाद चले गये।

सेवा लखनऊ क्यो छोड दिया ?

मैं जो लोग निराला जी की किताबे छापते थे, वे उन्हे कम पैसे देते थे। खुद मुनाफा खाते थे, लेखको की पर्वाह न करते थे। इसलिए निराला जी जीवन भर कभी इस प्रकाशक के यहा, कभी उस प्रकाशक के यहाँ अपनी किताबे बेचते रहे। उन्हे यह आराम न था कि किताबें लिखे और ईमानदारी से उनकी मेहनत का फल उन्हे मिलता रहे। इसीलिए इलाहाबाद चले गये।

सेवा वहा ज्यादा पैसे मिले ?

मैं वहा उनकी हालत और खराब हो गयी। बीच मे बीमार पड गये। कई सेर वजन कम हो गया। एक छोटे से घर मे रहते थे। उसकी छत बहुत नीची थी, निराला जी के सिर से जरा ऊची, जैसे पिंजडे मे शेर बन्द हो, ऐसे उस घर मे टहला करते थे। खाना भी खुद ही बनाते थे और बर्तन भी अपने हाथ से मलते थे। अब अवस्था दूसरी थी, बुढापा आ रहा था। इन मुसीबतो मे उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया।

सेवा अब भी उसी छोटे घर मे रहते हैं ?

मै नही, अब वह अपने एक मित्र के यहा रहते है । इलाहाबाद मे एक मोहल्ला है—दारागज । उसकी एक गली मे एक बहुत बडी कोठी है ।

सेवा उसी मे रहते है ?

मै नहीं, उसमे तो कोई अमीर आदमी रहता है । उसके सामने एक मामूली दो-मजिला मकान है । उसी मे निराला जी नीचे की बैठक मे रहते है ।

सेवा यह घर पहलेवाले से अच्छा होगा ?

मै हा, पहलेवाले से अच्छा है, फिर भी वह कमरा निराला जी के लिए बहुत छोटा है । पहले उसमे बिजली का पखा न था । तब बहुत तकलीफ होती थी । पास मे सडास था । उससे बदबू आती थी । निराला जी लुगी बाधे गली मे टहला करते थे ।

सेवा आप उन्हे यहा क्यो नही बुला लेते ?

मै कोशिश तो बहुत की । दो बार निराला जी यहा आये भी । लेकिन आगरा उन्हे अच्छा नही लगता । मुझे ही अच्छा नही लगता, उन्हे क्या लगता ।

सेवा क्यो आपको आगरा अच्छा क्यो नहीं लगता ?

मै जो आदमी अवध की नदियो और घने आम के बागो के बीच रह चुका है, उसे दूसरी जगह अच्छा

लगेगा ? निराला जी को अवध की धरती से प्रेम है। अब बुढापे मे वह दूसरी जगह नही रह सकते।

सेवा तो वहां वह कोई अच्छा मकान क्यो नही ले लेते ?

मै लोगो को चाहिए कि उनके लिए एक कोठी का प्रबन्ध कर दें। वैसे अब सरकार से उन्हे पेन्शन मिलती है। इसलिए पैसो की पहले जैसी चिन्ता नही है।

निराला जी अब बूढ़े हो गये है ?

सेवा निराला जी अब बूढे हो गये है ?

मै हा, बाल सफेद हो गये है। शरीर शिथिल हो गया है। लेकिन शरीर शिथिल होने पर भी वह अपनी जिन्दगी की लम्बी लडाई मे हारे नही, जीत गये। अब उनके विरुद्ध कोई चू भी नही करता। हिन्दी पढने-लिखने वालो मे जितना उनका सम्मान है, उतना किसी का नही। बता सकती हो क्यो ?

सेवा सम्मान तो होना ही चाहिए। इतने अच्छे आदमी है। अपने सुख की चिन्ता न करके सदा दूसरो का ध्यान रखते थे।

मै हा, निराला जी एक वीर योद्धा के समान है। समाज मे जो गरीबो को सताते है, निराला जी सदा उनसे लडते रहे। वह अपने लिए नही, दूसरो के लिए जिये। साहित्य मे उन्होने पुरानपथी विचारो को

बदल दिया। देश की प्रकृति पर, यहा की जनता पर, उन्होने नये ढग का साहित्य लिखा। इसीलिए उनका इतना सम्मान है।

सेवा पहले ही उनका सम्मान क्यों न हुआ ?

मै : जब कोई आदमी नयी बात करता है तो ज्यादातर लोग उसकी बात समझते नही है। उसके गुण धीरे-धीरे समझ मे आते है। यदि वह हिम्मत न हारे, अपनी बात पर अडा रहे, विरोधियो का मुकाबला करे, तो उसकी जीत अवश्य होती है। निराला जी ने जो कुछ लिखा, वह पैसा कमाने के लिए नही लिखा। वह साहित्य को ऊचा उठाना चाहते थे, उससे जनता मे नया साहस, नयी प्रेरणा पैदा करना चाहते थे, इसीलिए वह जीते और उनके विरोधी हारे।

सेवा · आप मुझे उनकी सरल कहानियां दीजिये। मै उन्हे पढूगी। और जब बड़ी हो जाऊगी तब उनकी सब किताबे पढूगी।

अब सेवा चली गयी थी। मेरे सामने "अनामिका" रखी थी। बीच से खोला तो "राम की शक्ति-पूजा" दिखायी दी। मैंने शुरू की दो पंक्तियां पढ़ी

रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र में लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर।

मैं सोचने लगा—सूर्य अस्त होने पर भी राम-रावण के युद्ध की कहानी ज्योति के पत्र में लिखी रह गयी। निराला जी के संघर्ष की कहानी भी इतिहास में अमर रहेगी।

और उनकी कविता का सूर्य ?

हिन्दी भाषा के आकाश में यह सूर्य कभी अस्त न होगा।

• • •

१५ अक्तूबर १९६१ के सबेरे सूर्य सचमुच अस्त हो गया। बीमारी, गरीबी और साहित्य में विरोधियों

से एक लबी लडाई के बाद निराला जी के जीवन का अन्त हुआ।

उनका हृदय बच्चो के समान सरल था और वह बच्चो को बहुत प्यार करते थे। 'देवी' कहानी मे उन्होने लिखा है कि उन्होने किस तरह पगली के बच्चे को दुलराया था। वह अपने मित्रो और परिचितो के बच्चो से बहुत जल्दी दोस्ती कर लेते थे और उन्हे खिलाते हुए सुखी होते थे।

एक बार वह मेरे साथ ग्वालियर गये थे। वहा कवि सुमन के घर पर चाय की मेज के पास बैठे-बैठे वह उनके पुत्र अरुण को खिलाने लगे। अरुण उनकी विशाल गोद मे बहुत ही प्रसन्न था। निराला जी उसे हाथो मे झुलाते थे और अपने मधुर कठ से रवीन्द्रनाथ का गीत गाते जाते थे—

जदि बारन करो तबे गाहिबो ना।

सेवा का भाई भुवन जब छोटा था, तब निराला जी उसे चिढाने के लिए एक दोहा सुनाया करते थे। उन्ही दिनो वह गाव गये थे और वहा से भौन कवि का पता लगाकर लौटे थे। मेरे छोटे भाई को घर मे लोग चौबे कहते थे। निराला जी ने दोहा रचा—

भुवन भौन छोडे नही, चौबे जी की आस।
याही सुख की आस मे, जात न काहू पास ।।

जहा भुवन दिखे, वही निराला जी ने दोहा कहना शुरू किया और हँसी के मारे अक्सर आधा ही कह पाते थे।

लखनऊ के सुन्दरबाग मोहल्ले मे हम लोगो के मित्र श्री छगालाल मालवीय रहते थे। निराला जी उधर से निकलते हुए अक्सर उनके यहा बैठकर गपशप करते थे। उनका छोटा लडका उन्हे ध्यान से देखता था। एक दिन उसने उनकी नकल उतारने की ठानी। उनकी छडी उठाकर उन्ही की तरह धीरे-धीरे झूमकर चलते हुए उसने कमरे का चक्कर लगाया। निराला जी अपनी नकल देख कर बहुत प्रसन्न हुए और बच्चे को शाबासी दी।

बच्चो जैसे उनके कोमल हृदय मे अपार दया थी। उन्होने अपनी एक कविता मे स्वामी विवेकानन्द के बारे मे लिखा है कि गाव मे उन्हे रोती हुई लडकी मिली जिसका घडा फूट गया था। स्वामी जी ने उसे घडा खरीद दिया। एक बुढिया बीमार थी। कोई उसकी देखभाल करने वाला न था। स्वामी जी ने उसकी उसी तरह देखभाल की जैसे कोई पुत्र अपनी

मा की देखभाल करता है। निराला जी ऐसी बाते कविता मे ही न लिखते थे, वह उन पर आचरण भी करते थे। उनके मित्र शिवपूजन सहाय जी ने उनके जीवन की ऐसी ही एक घटना का वर्णन किया है।

जिस प्रेस मे "मतवाला" छपता था, उसमे एक मुसलमान मजदूर काम करता था। उसका काम मशीन चलाना था। एक दिन उसका हाथ मशीन मे चला गया और वह बुरी तरह घायल हो गया। उसे तुरन्त अस्पताल भेजा गया। निराला जी उसके घर वालो को ढाढस बधाने उसके घर गये। जब वह अस्पताल मे था तो उसे गुलदस्ता खरीद कर दे आते कि फूल देखकर उसका मन प्रसन्न होगा। उन्होने इस बात का भी प्रबध कर दिया था कि उस गरीब मजदूर का बूढा बाप और बीवी-बच्चे भूखो न मरे।

कोई ताज्जुब नही कि निराला जी के न रहने पर हर एक ने यह अनुभव किया कि जैसे उसका अपना कोई सगा न रहा हो। उन्हे याद करने वालो मे पढे-लिखे लोग ही न थे, अपढ और साधारण लोग भी थे जो उन्हे अपना समझते थे। श्री गोविन्द सिह ने लिखा है कि जब उनकी अस्थिया काशी ले जायी गयी, तब एक कुली ने यह सुनकर कि दारागज वाले पडित जी नही

रहे, कहा, "पंडित जी ने एक साहब की गरदन दबोची थी। साहब रिक्शे वाले को मार रहा था।"

उन्होंने जीवन भर अन्याय का मुकाबला किया जिससे कि उनके देशवासी सुखी जीवन बिता सकें। इसीलिए लोग उन्हें प्रेम से, श्रद्धा से और गर्व से याद करते हैं और सदा याद करते रहेंगे।

उन्होंने अपने संघर्ष में कितनी बड़ी विजय पायी, इसे आज हर कोई देख सकता है। सच्ची मेहनत अकारथ नहीं जाती। निराला जी नहीं रहे, लेकिन देश की जनता के हृदय में वह सदा अमर रहेंगे।

निराला जी का
एक गीत, उन्हीं
की हस्तलिपि में

गीत

रस की बूँदें बरसो, नव घन!
जीवन सावन सरसो, नव घन!
कमलों के वन वारि विलोचन,
धो लो श्रमन बलाहक वाहन,
धान-जुवार-उड़द-अरहर-धन
धारण कर कर हरसो, नव घन!
खेत निराली ग्राम-कामिनी
नभ-नयनों झमकती दामिनी,
लखकर लोटी वास भामिनी,
पुरव-समीर तन परसो, नव घन!

— निराला